अध्याय 06

1857 की क्रांति

अधिगम प्रतिफल—

1857 के विद्रोह की शुरूआत, प्रकृति, फैलाव और उससे मिले सबक का वर्णन करें।

झारखण्ड में 1857 के विद्रोह की शुरूआत, फैलाव व प्रभाव का वर्णन कर सकेंगें।

सन् 1857 की क्रांति भारत भूमि पर ब्रितानी राज के इतिहास की सबसे अधिक रोमांचकारी और महत्वपूर्ण घटना थी। इस घटना को ''आजादी की प्रथम लड़ाई'' भी कहा जाता है। यह एक ऐसी घटना थी, जिसकी प्रचण्ड लपटों में एक बार तो ब्रितानियों का अस्तित्व जलकर मिटने वाला सा प्रतीत होने लगा था।

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना हुए लगभग सौ वर्ष हो चुके थे और 1857 तक वह अपने विस्तार की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। अंग्रेज भारत में व्यापार करने आये थे, लेकिन कालांतर में वे यहाँ शासक बन गए। ईस्ट इंडिया कम्पनी व्यापारिक शोषण एवं साम्रज्य विस्तार का कार्य कर रही थी। इसकी नीतियों से समाज का लगभग हर तबका प्रभावित हुआ था।

वस्तुत: 1857 का विद्रोह जिसे अंग्रेज इतिहासकार सिपाही–विद्रोह के नाम से पुकारते आ रहे हैं, वर्षो से जमा होते हुए भारतीयों के असंतोष का परिणाम था। बात यह थी कि भारतीयों ने कभी स्वेच्छा से ब्रिटिश राज्य को स्वीकार नहीं किया था। समय–समय पर अंग्रेजों को भारतीय टोप का सामना करना पड़ रहा था। उदाहरण के लिए मराठे, हैदरअली, टीपू सुल्तान जैसे क्षेत्रीय शासकों ने अंग्रेजों को भारत से हटाने के प्रयास किए लेकिन वे सफल नहीं हो सके। अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ सबसे संगठित, व्यापक और भयंकर विद्रोह 1857 में हुआ जो असफल रहने पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण था। इस अध्याय में हम 1857 ई. के महान विद्रोह के विभिन्न पहलुओं को जानने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न **1.** अंग्रेज भारत क्यों आए थे ?

(क) शासन करने (ख) व्यापार करने (ग) पढाई करने (घ) पर्यटन के उद्देक्ष्य से

उत्तर—1. (ख)।

© JCERT not to be republished

1857 ई. के क्रांति के कारण—

सन् सत्तावन का विद्रोह 1757 में प्लासी युद्ध के पश्चात् सौ वर्षो तक एकत्र हुए कारणों का विस्फोट था, इसका विस्फोट सैनिक विद्रोह के रूप में हुआ था। लेकिन इसके पीछे विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक एवं धार्मिक कारण मौजूद थे। जिसने क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार की।

राजनीतिक कारण—

डलहौजी ने हड़प नीति के तहत भारतीय नि:संतान राजाओं का गोद लेने की प्रथा पर रोक लगा दी। इसी नीति के तहत सतारा, नागपुर, संभलपुर, झाँसी और बरार आदि राज्यों की ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया। उत्तर भारत के बड़े राज्य अवध को कुशासन पर झूठा आरोप लगाकर ब्रिटिशों ने उसे अपने अधीन कर लिया।

नाना साहब के साथ अन्याय—

लार्ड डलहौली ने बाजीराव पेशवा द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब का पेंशन बंद कर दिया। पेंशन बंद करना अंग्रेजों के लिए 'गले की हड्डी बना' तथा विद्रोह को जन्म दिया।

मुगल सम्राट बहादुरशाह के साथ दुर्व्यवहार—

मुगल बादशाह जफर को अपमानित करने के लिए उनका नजराना बंद कर दिया गया। सिक्कों पर से बादशाह का नाम हटा दिया गया। यह भी कह दिया गया था कि उसके उत्तराधिकारियों को बादशाह नहीं माना जायेगा। चूँकि मुगल बादशाह को भारतीय जनता का प्रतिनिधि माना जाता था, इसलिए उसके अपमान को भारतीय जनता ने अपना समझा और विद्रोह के भाव उभरने लगे।

झाँसी की समस्या—

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र को अंग्रेजों ने राजा मानने से इंकार कर दिया। अंग्रजों के इस बर्ताव ने रानी लक्ष्मीबाई को अंग्रेजों के प्रति परभिन्न कर दिया। रानी ने 1857 ई. के विद्रोह में अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए।

अंग्रेजों ने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की उपाधियाँ जब्त कर ली। देशी राजाओं की सेनाओं को भंग कर दिए। जिससे लाखों लोग बेरोजगार हो गए। कुलीन एवं जमींदारों के साथ भी अंग्रेजों ने बुरा बर्ताव किया। इनके बहुत सारे अधिकारों को अंग्रेजों ने छीन लिया। शासन में शामिल लोगों के साथ भी भेदभाव पूर्ण नीति अपनाई गई। अंग्रेजों ने कुल मिलाकर ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी। जिससे भारत के सभी वर्ग नाराज हो गए। इन सभी लोगों की सक्रिय भागीदारी ने विद्रोह को जन आंदोलन बना दिया।

© JCERT not to be republished

सामाजिक एवं धार्मिक कारण—

ब्रितानियों द्वारा भारतीयों के सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप—

अंग्रेजों ने समाज सुधार के अनेक कार्य आरम्भ किए। इन कार्यों से भारतीयों के सामाजिक जीवन में भी उनका हस्तक्षेप बढ़ गया। अंग्रेजों ने सती प्रथा एवं नर-बलि को बंद किया। लार्ड कैनिंग ने विधवा विवाह को मान्यता प्रदान की। यद्यपि ये कानून समाज के लिए हितकर थे, लेकिन भारत के रूढ़िवादी जनता को यह लगने लगा कि अंग्रेज उनके संस्कृति को नष्ट कर पाश्चात्य संस्कृति को लागू करना चाहते हैं। अतः इन लोगों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह के मार्ग को अपनाया।

पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव—

अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार, रेल, डाक, तार आदि कि व्यवस्था से रूढ़िवादी भारतीयों को लगने लगा कि अंग्रेज उनके समाज की मूल विशेषताओं को समाप्त करना चाहती है। पाश्चात्य सभ्यता ने सचमुच भारतीयों के रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, शिष्टाचार एवं व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। इन चीजों ने भारतीयों के मन में यह भर दिया कि अंग्रेज अपनी शिक्षा द्वारा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को नष्ट करना चाहते हैं।

पाश्चात्य संस्कृति को प्रोत्साहन—

अंग्रेजों ने भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रचार न करके पाश्चात्य संस्कृति की प्रोत्साहन देते हुए भारत में इसका प्रचार किया। अंग्रेजों ने ईसाई धर्म को बहुत प्रोत्साहन दिया। स्कूल, अस्पताल, दफ्तर एवं सेना ईसाई धर्म के प्रचार के केन्द्र बन गए। इस तरह भारतीय को यह विश्वास हुआ कि ब्रितानी इनकी संस्कृति को नष्ट करना चाहते हैं। अतः इनमें गहरा असंतोष उत्पन्न हुआ। जिसने क्रांति को जन्म दिया।

धार्मिक कारण—

अंग्रेज अपनी नीति के अनुसार अधिकांश भारतीय को ईसाई बनाकर अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करना चाहते थे। इस कारण वे ईसाई धर्म स्वीकार करने वाले को सरकारी नौकरी, उच्च पद एवं अनेक सुविधाएँ प्रदान करते थे। अंग्रेजों के इस नीति ने हिन्दू और मुसलमानों के मन में कम्पनी शासन के प्रति घृणा भर दी थी। अब विद्रोह की शुरूआत हुई, तब हिन्दू, मुसलमान एकजुट हो गए। 1831 ई. में चार्टर एक्ट पारित किया गया, जिसके द्वारा ईसाई मिशनरियों को भारत में स्वतंत्रता ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार की स्वतंत्रता दे दी गई। ईसाई मिशनरी द्वारा हिन्दू धर्म के देवी-देवताओं तथा इस्लाम धर्म के पैगम्बर की बुराई खुलें आम की जाती थी। हिन्दू एवं मुसलमानों को ईसाईयों के इस बर्ताव ने काफी चोट पहुँचाई।

© JCERT not to be republished

आर्थिक कारण—

व्यापार का विनाश—

अंग्रेजों ने जमकर भारतीयों का आर्थिक शोषण किया था। अंग्रेजों ने भारत में आते ही यहाँ के छोटे-छोटे लघु उद्योगों को नष्ट कर दिया। भारत से कच्चे माल इंग्लैण्ड ले जाकर वहाँ के उद्योगों में सामान तैयार कर उसे पुनः भारतीय बाजारों में बेचा जाता था। इन चीजों से अंग्रेजों ने भारत के व्यापार पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। भारतीय व्यापारियों का आर्थिक शोषण अंग्रेजों द्वारा अपने मनमाफिक किया जाने लगा। अंग्रेजों द्वारा बनाई गई मुक्त व्यापार की नीति ने भारतीय व्यापार को अपंग बना दिया।

किसानों का शोषण—

अंग्रेजों द्वारा किसानों की दशा सुधार के नाम पर स्थाई बंदोबस्त, रैयतवाड़ी एवं महालवाड़ी प्रथा लागू की, किन्तु इन सभी प्रथाओं में किसानों का शोषण किया गया उनसे आर्थिक लगान वसूल किया गया।

अकाल—

अंग्रेजों के शासनकाल में बार-बार अकाल पड़े, जिसने किसानों की स्थिति और खराब हो गई।

वस्तुतः अंग्रेजों द्वारा भारत के आर्थिक शोषण ने समाज के सभी वर्गों को प्रभातिव किया और उनमें असंतोष की भावना भर दी, जिससे पीड़ित सभी लोग ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेकनें की लड़ाई में कूद पड़े।

© JCERT not to be republished

राजनीतिक कारण के प्रश्न—

(1) लार्ड डलहौजी ने .... का पेंशन बंद कर दिया।

(2) 1857 के क्रांति के समय मुगल बादशाह .... को भारतीय जनता का प्रतिनिधि माना जाता था।

(3) अंग्रेजों ने .... वेह दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया।

(4) उत्तर भारत के बड़े राज्य .... को कुशासन का आरोप लगाकर अपने में मिला लिया।

उत्तर—(1) बाजीराव पेशवा द्वितीय, (2) बहादुरशाह जफर, (3) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, (4) अवध।

सामाजिक एवं धार्मिक कारण के प्रश्न—

(1) किस गर्वनर जनरल ने विधवा विवाह को मान्यता प्रदान की।

(क) लार्ड डलहौजी (ख) लार्ड कैंनिंग (ग) लार्ड रिपन (घ) इनमें से कोई नहीं।

(2) अंग्रेजों द्वारा—

(क) हिन्दू धर्म का प्रचार किया गया। (ख) ईसाइ धर्म का प्रचार-प्रसार किया गया।
(ग) भारतीय शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया। (घ) इनमें से कोई नहीं।

(3) निम्नांकित में से कौन-सा कार्य अंग्रेजों द्वारा नहीं किया गया।

(क) भारत में रेल का विकास (ख) नारी शिक्षा को प्रोत्साहन

(ग) अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार (घ) भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रोत्साहन

उत्तर—(1) ख, (2) ख, (3) घ।

सैनिक कारण—

अंग्रेजों के खिलाफ असंतोष की भावना जोरों से फैल रही थी। परन्तु विप्लव के रूप में इसका प्रस्फुटित होना तब तक संभव नहीं था, तब तक भारतीय सेना अंग्रेजों के साथ थी। इस समय कई कारण से भारतीय सेना अंग्रेजों के साथ थी। इस समय कई कारण से भारतीस सैनिकों में भी असंतोष फैल रहा था। कम्पनी की सेना में अंग्रेज सैनिकों की तुलना में भारतीय सैनिकों की संख्या अधिक थी। असंतोष का प्रमुख कारण अंग्रेज सैनिकों की तुलना में भारतीय सैनिकों को कम वेतन तथा सुविधाएँ प्राप्त थी। सेना के उच्च पदों पर सिर्फ अंग्रेज ही नियुक्त हो सकते थे। 1856 ई. में बने नियम के अनुसार अब कम्पनी के सैनिकों को देश या विदेश कहीं भी समुद्रपार युद्ध के लिए भेजा जा सकता था। भारतीय सैनिकों के लिए समुद्रपार करना धर्म के विरुद्ध था। सेना में अधिकांश सैनिक ब्राह्मण तथा राजपूत थे जिनमें अपने कुल, जाति तथा धर्म की पवित्रता की भावना अत्यन्त प्रबल थी। उनका विश्वास था कि समुद्र यात्रा करने में उनका धर्म नष्ट हो जायेगा। सेना में भारतीय सैनिकों के रीति-रिवाजों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। निःशुल्क डाक सेवा की व्यवस्था भारतीय सैनिकों के लिए समाप्त कर दी गई थी। अवध के सैनिक जिनकी संख्या बंगाल की सेना में अधिक थी। वे अपने राज्य छीने जाने एवं अपने नवाब के अपमान से नाराज थे। सेना में बहुत सारे सैनिक गाँव के किसान परिवार से थे, इसलिए किसानों की नाराजगी भी सैनिकों में अतिशीघ्र पहुँच गई।

सोचिए—

ब्रिटिश देशी रियासतों को क्यों हड़पना चाहते थे ?

© JCERT not to be republished

प्रश्न—1857 की क्रांति में भारतीय अंग्रेजों के बजाय विद्रोहियों का साथ दिया। क्यों—

(क) भारतीय सेना को अंग्रजों के तुलना में कम वेतन मिलता था।

(ख) भारतीय को समुद्र पार कर युद्ध का आदेश दिया गया था।

(ग) चर्बी वाले कारतूस प्रयोग की बाध्यता थी

(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर—(घ)

1857 ई. के विद्रोह का तात्कालिक कारण था 1856 ई. में कम्पनी सरकार के द्वारा नवीन एनफील्ड राइफल के प्रयोग की अनुमति देना। यह राइफल पुरानी लोहे वाली बंदूक ब्राउन बैस से अच्छी थी। इस नये राइफल प्रयोग के लिए नई कारतूस दी गई जिन्हें मुँह से काटकर प्रयोग किया जाता था। अफवाह फैल गई कि उन कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी हे। इससे हिन्दू और मुसलमान सैनिक भड़क उठे। उन्हें संदेह हुआ कि सरकार उनका धर्म नष्ट कर उन्हें ईसाई बनाना चाहती है। विद्रोह का तात्कालिक कारण इसी कारतूस ने पैदा किया।

अन्तत: अंग्रेजी सरकार की नीतियों से त्रस्त भारतीय समुदाय के हर वर्ग ने अंग्रेजों का विरोध किया। असंतोष की ज्वालामुखी ऐसी फुटी कि देखते ही देखते विद्रोह की लपटें पूरे भारत वर्ष में फैल गई।

प्रश्न—1857 ई. के विद्रोह के प्रमुख कारणों में कौन नहीं है ?

(क) भारत के सामाजिक मामले में अंग्रेज का हस्तक्षेप।

(ख) भारतीय राज्यों को अंग्रेज हड़पना चाहते थे ?

(ग) भारतीय सैनिक के साथ भेदभाव।

(घ) इंग्लैण्ड का भारत पर आक्रमण।

उत्तर—(घ)

© JCERT not to be republished

1857 की क्रांति का आरम्भ और प्रसार—

कारतूस वाली बात सभी छावनियों में फैलने लगी। सैनिकों ने इन कारतूसों का प्रयोग करने से इनकार कर दिया। 29 मार्च 1857 ई. 34वीं रेजिमेंठ बैरकपुर (मुर्शिदाबाद के नजदीक) छावनी में मंगल पाण्डेय ने नए कारतूस के उपयोग से खिलाफ अपने साथियों को विद्रोह का आवाहन करते हुए लेफिटनेंट झूरसन को गोली मार दी। मंगल पाण्डेय को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 8 अप्रैल को उन्हें फाँसी दे दी गई।

यह सूचना जंगल में आग की तरह पूरे भारत में फैल गई। मेरठ में सैनिकों की बहुत बड़ी छावनी थी। 10 मई 1857 को यहाँ के सैनिकों ने खुले तौर पर विद्रोह कर दिया। जेल में बन्द अपने साथियों को मुक्त कराते हुए वे दिल्ली की तरफ बढ़े। 11 मई 1857 को विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। मुगल शासक बहादुरशाह जफर उस समय दिल्ली में मौजूद थे। सैनिकों ने बहादुरशाह द्वितीय को भारत का

सम्राट घोषित कर दिया। दिल्ली के लाल किले पर विद्रोहियों ने अपना अधिकार कायम कर लिया और मुगल बादशाह की जय-जयकार कर उनसे क्रांति का संचालन करने की अपील किया। क्रांतिकारियों को दिल्ली पर पूर्ण अधिकार हो गया।

बहादुरशाह द्वितीय ने देश भर के मुखियाओं और शासकों को चिठ्ठी लिखकर अंग्रेजों से लड़ने के लिए भारतीय राज्यों का एक संघ बनाने का आह्वान किया। बादशाह के आह्वान और दिल्ली में घटने वाली घटनाओं का समाचार मिलते ही अन्य नगरों में विद्रोह प्रारम्भ हो गया। इसमें कानपुर तथा लखनऊ का विद्रोह बड़ा विकराल रूप धारण कर लिया। नाना साहेब ने कानपुर पर अपना अधिकार स्थापित किया। बुन्देलखण्ड में झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ने और मध्य भारत में तात्या टोपे (जो नानासाहेब का सेनापति था) नामक एक मराठा बाह्मण ने क्रांतिकारियों का नेतृत्व ग्रहण किया और विद्रोह का संचालन किया। बिहार में जगदीशपुर के बाबू कुंवर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया।

आर्थिक कारण प्रश्न—

(1) अंग्रेजों द्वारा बनाई गई .... की नीति ने भारतीय व्यापारियों को अपंग बना दिया।

(2) किसानों के दशा सुधार के नाम पर अंग्रेजों द्वारा रैयतवाड़ी, महालवाड़ी एवं .... लागू किया गया।

(3) अंग्रेजों ने अपने व्यापार बढ़ाने के लिए भारत के छोटे-छोटे लघु .... को नष्ठ कर दिया।

(4) अंग्रेजों के .... ने 1857 ई. के क्रांति को जन्म दिया।

उत्तर—(1) मुक्त बाजार की नीति, (2) स्थायी बंदोबस्त, (3) उद्योगों, (4) आर्थिक शोषण।

© JCERT not to be republished

सैनिक विद्रोह—	**गतिविधि—**
जब सिपाही इकट्ठा होकर अपने सैनिक अफसरों का हुक्म मानने से इनकार कर देते हैं।	मुगल सम्राट बादशाह विद्रोहियों का समर्थन करने के लिए क्यों तैयार हुए।

प्रश्न—

(1) मंगल पाण्डेय को फाँसी क्यों दी गई ?

(क) उसने लड़ाई की थी।

(ख) वे अंग्रेजों के खिलाफ हो गए थे।

(ग) उसने चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग से इनकार करते हुए अंग्रेजी अफसरों की हत्या कर दी थी।

(घ) इनमें से कोई नहीं

(2) 1857 की क्रांति की शुरूआत किस में की गई।

(क) जून (ख) मई (ग) जुलाई (घ) अप्रैल।

(3) 1857 ई. के विद्रोह का प्रमुख केन्द्र कौन था ?

(क) कानपुर तथा लखनऊ (ख) राँची एवं अमरीदपुर

(ग) बोकारो एवं धनबाद (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(1) ग, (2) ख, (3) क।

© JCERT not to be republished

विद्रोह का स्वरूप—

1857 ई. के विप्लव को लेकर विद्धान एकमत नहीं हैं। अलग-अलग लोग इसे अलग-अलग नजरिए से देखते हैं। कुछ अंग्रेजों की यह मान्यता थी कि विप्लव जनसाधारण द्वारा असंतोष अभिव्यक्ति का एक उदाहरण था, परन्तु अधिकांश ब्रिटिश लेखक इसे मात्र सैनिक विद्रोह मानते थे। इसाई मिशनरी इसे ईश्वर द्वारा भेजी विपत्ति समझते थे।

इन विचारों के ठीक विपरीत विनायक दामोदर साबरकर ने इसे भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी है। परन्तु आज भी इस विप्लव के स्वरूप को लेकर मतभेद विद्यमान है।

इसे भी जाने—

- 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग था।

विद्रोह का अंत—

इतने उथल-पुथल के बावजूद अंग्रेजों ने अपनी पूरी ताकत लगाकर विद्रोह को कुचलने का फैसला लिया। इन्होंने इंग्लैण्ड से और फौज मँगवाए, विद्रोहियों को जल्दी दबाने के लिए नए कानून बनाए और विद्रोह के मूख्य केन्द्रों पर धावा बोल दिया। सितम्बर 1857 में दिल्ली दोबारा अंग्रेजों के कब्जे में आ गई। अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई। उनके बेटों को उनके आँख के सामने गोली मार दी गई। बहादुर शाह और उनकी पत्नि बेगम जीनत महल को अक्टूबर 1858 में रंजून जेल भेज दिया गया। जहाँ नम्बर 1862 में बहादुर शाह जफ़र ने अंतिम साँस ली। जून 1858 ई. में रानी लक्ष्मीबाई लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त की। नाना साहेब और बेगम हजरत महल नेपाल भाग गए। बिहार में भी बहुत बार अंग्रेजों को कुंवर सिंह से हार का सामना करना पड़ा, लेकिन वहाँ भी अंग्रेज विद्रोह को दबाने में सफल रहा।

ताँत्या टोपे मध्य भारत में जंगलों में रहते हुए आदिवासियों और किसानों की सहायता से छापामार युद्ध चलाते रहे।

क्रांतिकारियों की हार से लोगों की हिम्मत टूटने लगी। बहुत सारे लोगों ने लड़ाई से किनारा कर लिया। अंग्रेजों ने भी ऐसे लोगों के लिए इनामों की घोषणा की। उन्होंने आश्वासन दिया कि लोगों के उनके परम्परागत जमीन पर अधिकार बने रहेंगे। विद्रोहियों को कहा गया कि वे आत्मसमर्पण कर दें। यदि वे किसी अंग्रेज की हत्या नहीं किए होंगे तो वे सुरक्षित रहेंगे। परन्तु इसके बावजूद सैकड़ों सिपाहियों, नवाबों और राजाओं पर मुकदमें चलाए गए और उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया।

© JCERT not to be republished

प्रश्न—

- विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों ने कौन से महत्वपूर्ण कदम उठाए ?

  (क) इंग्लैण्ड से और जोन मंगवाए।

  (ख) विद्रोहियों को फाँसी दिया।

  (ग) मुगल बादशाह को जेल भेज दिया।

  (घ) इनमें से सभी।

उत्तर—(घ)

क्यों असफल रहा विद्रोह—

1857 का विद्रोह आम जन की भागीदारी के बाद भी असफल रहा। जिसके कई कारण थे—

- विद्रोहियों के पास हाथियों और गोला बारूद की सीमित मात्रा थी।
- विद्रोहियों में संचार और केन्द्रीय सत्ता की कमी थी।
- ब्रिटिशों के पास पर्याप्त संसाधन और बेहतर हथियार एवं उपकरण थे।
- विद्रोहियों का विदेशी शासन को समाप्त करने के आलवा भविष्य के लिए कोई स्पष्ट राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था।
- विद्रोही इस आंदोलन के व्यापक स्वरूप के बावजूद व्यापारियों, बुद्धिजीवियों और कई स्थानीय राजाओं का सहयोग नहीं प्राप्त कर सके।
- ब्रिटिशों ने संचार एवं आवागमन के साधनों का प्रयोग विद्रोह दबाने के लिए किया।

क्यों असफल रहा विद्रोह—

प्रश्न—रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(1) विद्रोहियों के पास अंग्रेजों के मुकाबले .... की कमी थी।

(2) 1857 ई. के विद्रोह के असफलता का मुख्य कारण विद्रोहियों में नेतृत्व का आभाव था।

(3) अंग्रेजों ने और के साधनों का प्रयोग कर विद्रोह को दबाया।

(4) भारत के राजनैतिक भविष्य को लेकर भारतीयों के मन में का अभाव सभी विद्रोह को असफल बनाया।

उत्तर—(1) हथियारों, (2) संचार, केन्द्रीय, (3) संचार, आवागमन, (4) स्पष्ट रणनीति।

© JCERT not to be republished

विद्रोह के परिणाम—

1857 ई. की क्रांति ने अंग्रजों को सतर्क कर दिया। उसे लगने लगा कि यदि उन्हें भारत पर लम्बे समय शासन करना है तो उन्हें अपनी नीतियों में बदलाव करना होगा। 1857 ई. के विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने अपनी नीतियों में व्यापक सुधार किए। ब्रिटिशों ने क्रांति के बाद निम्नलिखित बड़े बदलाव किए।

(i) कंपनी शासन का अंत—

1857 के विद्रोह का प्रमुख परिणाम यह रहा कि 2 अगस्त, 1858 को ब्रिटिश संसद ने एक अधिनियम पारित किया जिसमें भारत में कम्पनी शासन का अंत कर दिया गया और ब्रिटिश भारत का प्रशासन ब्रिटिश ताज (क्राउन) ने ग्रहण कर लिया।

(ii) भारत के शासन पर महारानी का नियंत्रण—

1858 ई. में पारित हुए कानून के अनुसार भारत का शासन इंग्लैण्ड के महारानी के हाथों में चला गया। 1 नवम्बर, 1858 को इलाहाबाद में आयोजित दरबार में लार्ड कैनिंग ने महारानी की उद्घोषणा को पढ़ा। जिसमें कहा गया था कि भारत में कंपनी का शासन समाप्त कर भारत का शासन सीधे क्राउन के हाथों में कर दिया गया। एक भारत मंत्री था सचिव तथा 15 सदस्यों वाली इंडिया कौंसिल की स्थापना की गई।

(iii) गवर्नर जनरल पद में परिवर्तन—

1858 ई. में पारित कानून के अनुसार भारत में अब कम्पनी के गनर्वर जनरल के पद को समाप्त कर दिया गया। इनके स्थान पर अब वायसराय पद सृजित किया गया।

(iv) सेना का पुनर्गठन—

1857 ई. का विप्लव सैनिक विद्रोह के रूप में हुआ था। अतः सेना का पुनर्गठन आवश्यक था। सेना में भारतीय सैनिकों को घटाने एवं यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ाने का निर्णय लिया गया। इसका असर यह हुआ कि जहाँ 1859 में सेना में 45322 अंग्रेज सैनिक थे वहीं 1862 ई. में अंग्रेज सैनिकों की सं. 91897 हो गई। अवध, बिहार, मध्य भारत और दक्षिण भारत की जगह गोरखा, सिक्ख एवं पठानों में से सिपाही भर्ती करने का फैसला लिया गया।

© JCERT not to be republished

(v) देशी रियासतों के लिए नीति में परिवर्तन—

1857 की क्रांति के पश्चात् को हड़पने की नीति को त्याग दिया गया। उन्हें दत्तक पुत्र अपनाने की स्वतंत्रता दी गई, परन्तु उन्हें इंग्लैण्ड की महारानी के अधीन अपना शासन चलाने की स्वीकृति दी गई।

फूट डालो राज करो नीति—

1857 की क्रांति में कई हिन्दू एवं मुसलमानों ने भाग लिया था। जिसमें हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान अधिक उत्साहित थे। अंग्रेजों ने हिन्दूओं का पक्ष लेकर हिन्दुओं और मुस्लिमों के मध्य फूट डालो राज करो का माध्यम को अपनाया जिसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू और मुसलमानों में मनमुटाव पैदा हो गया जिसका भावी राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। जिसका अंतिम परिणाम देश का विभाजन हुआ।

प्रशासन के निम्न पदों पर भारतीय—

महारानी के घोषणा में यह आश्वासन दिया गया था कि बिना किसी पक्षपात के शिक्षा, सच्चारित्रता एवं योग्यतानुसार सरकारी नौकरियों में भारतीय को स्थान दिया जायेगा। परन्तु इसका पालन कभी नहीं किया गया। उन्हें भारतीयों को प्रशासन में कलर्कों और सहायकों आदि के निम्न पदों पर लिया जाने लगा।

आर्थिक प्रभाव—

विद्रोह के बाद साम्राज्य विस्तार की नीति तो समाप्त हो गई। लेकिन अग्रेजों के द्वारा आर्थिक शोषण प्रारंभ कर दिया गया। चाय, कपास, जूट, कॉफी, तंबाकू आदि के व्यापार को बहुत बढ़ावा दिया। भारतीय उद्योगों को संरक्षण नहीं दिया गया। नई ईस्ट इंडिया कौटन कंपनी स्थापित की गई जो भारत से रुई ले जाकर इंग्लैण्ड से कपड़ा बनवाकर भारत भेजती थी। केवल ब्रिटिश पूँजीपतियों को भारत में पूँजी लगाने हेतु प्रोत्साहित किया तथा उन्हें सुरक्षा प्रदान की। अंग्रेजों के इस आर्थिक शोषण से देश गरीब होते गया।

भारतीयों को लाभ—

विद्रोह के कारण भारतीयों को अनेक लाभ भी हुए। यद्यपि 1857 में ब्रिटिश शासन को समाप्त के प्रयास का दमन कर दिया गया था, परन्तु इससे भारतीयों के मन में राष्ट्रीय भावना अत्यधिक तीव्र हो उठी ओर इसी राष्ट्रीय भावना से हमारे राष्ट्रीय आंदोलनों का संचालन किया तथा 1947 में विदेशी सत्ता की इतिश्री कर दी।

© JCERT not to be republished

(1) 1857 ई. के क्रांति के बाद ब्रिटिश संसद ने कब भारत के लिए एक अधिनियम पारित किया ?

(क) 1 नवम्बर, 1958 (ख) 2 अगस्त, 1858

(ग) 10 मई, 1957 (घ) इनमें से कोई नहीं

(2) 1857 ई. के क्रांति के परिणाम इनमें से कौन नहीं है ?

(क) सेना का पुनर्गठन (ख) कंपनी शासन का अंत

(ग) फूट डालो शासन करो की नीति (घ) भारत अंग्रेजों से मुक्त हो गया

(3) 1857 के विद्रोह भारतीयों के असफल रहा, परन्तु इस विद्रोह ने भारतीय को किस रूप में लाभ पहुँचाया ?

(क) भारतीय के मन में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ।

(ख) भारतीय लोग आजाद हो गए।

(ग) भारतीय आर्थिक रूप से सम्पन्न हो गए।

(घ) भारतीय का लगान माफ हो गया।

(4) 1857 ई. में क्रांति के फलस्वरूप अंग्रेजों द्वारा सेना के पुनर्गठन हेतु कौन-से कार्य किए गए ?

(क) भारतीय सैनिकों का वेतन बढ़ाया गया।

(ख) भारतीय को सेना में अधिकारी बनाया गया।

(ग) सेना में अंग्रेज सैनिकों की संख्या बढ़ाई गयी।

(5) 1857 ई. के विद्रोह के बाद अंग्रेजों द्वारा कौन-सी नई कम्पनी भारत में स्थापित की गई ?

(क) नई ईस्ट इण्डिया कौटन कम्पनी की स्थापना।

(ख) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया।

(ग) चाय की कम्पनी।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(1) (ख), (2) (घ), (3) (क), (4) (ग), (5) (क)।

स्व-मूल्यांकन—

(1) 'फूट डालो राज करो' से आप क्या समझते हैं ?

(2) 1857 ई. के विद्रोह के बाद ब्रिटिश प्रशासन के सबसे बड़े अधिकारी को भारत में किस नाम से जाना जाता है ?

(3) 1857 क्रांति के बाद ब्रिटिश ने सेना में कौन-सा बड़ा बदलाव किया ?

1857 की क्रांति एवं झारखण्ड—

1857 ई. के विद्रोह की चिंगारी से झारखण्ड भी अछूता नहीं रहा। 1855 ई. में राजमहल में संथाल विद्रोह से इसका बीजारोपण हो चुका था। झारखण्ड में विद्रोह का आरंभ रोहिणी गाँव में हुआ था। यह स्थान वर्तमान में देवघर जिला के निकट अजय नदी के किनारे स्थित है। रोहिणी 32वीं रेजिमेंट एक मुख्यालय था। 12 जून, 1857 को 5वीं देशी अनियमित घुड़सवार सेना के सिपाही सलामत अली, अमानत अली, हारुन शेख ने विद्रोह की शुरुआत की थी।

बिहार में स्थित दानापुर कैंट के सिपाही एवं शाहाबाद के जमींदार बाबू कुँवर सिंह द्वारा किए गए विद्रोह की सूचना पाकर झारखण्ड में भी विद्रोह के लिए सैनिक आगे आए। देखते ही देखते विद्रोह की लपटे देवघर, रामगढ़, चाईबासा, हजारीबाग, चतरा, राँची स्थित सैनिक छावनियों से उठने लगी। 30 जुलाई, 1857 हजारीबाग में, 2 अगस्त, 1857 को राँची के डोंरडा छावनी में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। राँची में विद्रोह को ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव (बड़कागह) ने नेतृत्व प्रदान किया। ठाकुर विश्वनाथ साहदेव ने पाण्डेय गणपत राय को अपना सेनापति नियुक्त किया। 31 जुलाई, 1857 को चुटूपालु घाटी में शुरू हुए आंदोलन

© JCERT not to be republished

का नेतृत्व माधव सिंह और नादिर अली खाँ कर रहे थे। 1857 की क्रांति में पूरे छोटानागपुर में सबसे पहले 4 अक्टूबर 1857 को चतरा की कानी पहाड़ी के पास क्रांतिकारी श्रयमंगल पाण्डेय और नादिर अली खाँ को फाँसी दी गई थी।

© JCERT not to be republished

ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव	पाण्डेय गणपत राय	सूबेदार नादिर अली	नीलाम्बर एवं पीताम्बर

टिकैत उमराव सिंह, चमा सिंह और जगन्नथ शाही एवं शेख भिखारी संथाल विद्रोहियों से संपर्क कर उन्हें ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह करने का आह्वान किया। टिकैट उमराव सिंह (ओरमांझी) तथा शेख भिखारी को 8 जनवरी, 1858 ई. को चुटुपालू घाटी में एक वृक्ष से लटका कर फाँसी दे दी गई।

पलामू में नीलाम्बर–

पीताम्बर दो महान स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने 1857 ई. के विद्रोह को इस क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान किया। चेरो सरदार भवानी राय सहित अनेक लोगों ने पलामू क्षेत्र के विश्रामपुर में विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया।

अंग्रेजों ने बड़ी निर्दयता से विद्रोह को कुचलने का प्रयास किया। कानपुर के बाद पहला सामूहिक फाँसी अंग्रेजों ने राँची के वर्तमान शहीद चौक में अंजाम दिया। कर्नल डाल्टन ने 16 अप्रैल, 1858 ई. इस जगह पर ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव एवं 21 अप्रैल, 1858 को पाण्डेय गणपत राय को फाँसी पर लटका दिया।

दर्जनों नायकों को फाँसी पर लटकाने के बावजूद अंग्रेज झारखण्ड में विद्रोह को दबाने में बहुत जल्दी कामयाब नहीं हो सके। छोटानागपुर क्षेत्र में लगभग 1 साल तक अंग्रेजों का कामकाज पूर्णतः ठप्प रहा।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य

विद्रोह के केन्द्र		क्रांति के भारतीय नायक
दिल्ली	—	बहादुर शाह जफर, बख्त खां
कानपुर	—	नाना साहेब, तात्याँ टोपे
लखनऊ	—	बेगम हजरत महल
फैजाबाद	—	मौलवी अहमदुल्लाह
झांसी	—	रानी लक्ष्मीबाई
इलाहाबाद	—	लियाकत अली
जगदीशपुर	—	कुँवर सिंह
बरेली	—	खान बहादुर खान
फतेहपुर	—	अजीमुल्लाह

- मंगल पाण्डेय नामक सिपाही ने बैरकपुर छावनी में चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करते हुए अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया।
- 1857 ई. के विद्रोह की शुरुआत 10 मई, 1857 को की गई।
- चर्बी वाले कारतुस का प्रयोग विद्रोह का तात्कालिक कारण माना जाता है।
- 1857 ई. के क्रांति के बाद भारत पर पूर्णतः अंग्रेजों की शासन स्थापित हुआ।
- 1857 ई. के बाद भारत में ब्रिटिश शासन के प्रमुख को गवर्नर जनरल के बजाय वायसराय कहा जाने लगा।
- 1857 ई. के पश्चात् अंग्रेजों ने शासन के लिए फूट डालो और शासन करो की नीति अपनायी।

1857 की क्रांति एवं झारखण्ड—

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(1) झारखण्ड में 1857 ई. की क्रांति का बीजारोपण 1855 ई. के .... विद्रोह से हो चुका था।

(2) 1857 ई. में राँची के .... छावनी में सैनिकों ने विद्रोह किया।

(3) 1857 ई. में क्रांतिकारी जयमंगल पाण्डेय और नादिर अली खाँ को चतरा की .... के पास फाँसी दे दी गई।

(4) 12 जून, 1857 ई. में झारखण्ड में क्रांति की शुरुआत .... तथा .... नामक तीन घुड़सवार सेना के सिपाहियों द्वारा ही गई थी।

उत्तर—(1) संथाल, (2) डोरंडा, (3) काली पहाड़ी, (4) सलामत अली, अमानत अली एवं हारुन शेख।

© JCERT not to be republished

अभ्यास प्रश्न

(I) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(1) 1857 ई. के विद्रोह को .... विद्रोह भी कहा जाता है।

(2) बहादुर शाह जफर की मृत्यु .... में हुई थी।

(3) .... की मौत से 1857 का विद्रोह आरंभ हुआ।

(4) नाना साहेब .... के दत्तक पुत्र थे।

(5) नीलाम्बर-पीताम्बर .... के दो महान स्वतंत्रता सेनानी थे।

(6) कंपनी सरकार ने 1856 में .... राइफल के प्रयोग की अनुमति दिया।

(7) .... 1857 ई. में भारत के गवर्नर जनरल थे।

(8) ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव को .... में फाँसी दी गई।

(9) अबध पर कंपनी ने .... का आरोप लगाकर उसे ब्रिटिश राज में मिला लिया।

(10) अंग्रेजों ने 1857 ई. के बाद .... की नीति के तहत हिन्दू और मुसलमानों को बाँटा।

उत्तर—(1) सिपाही, (2) रंगून, (3) मंगल पाण्डेय, (4) बाजीराव पेशवा, (5) पलामू, (6) एनफील्ड, (7) लार्ड कैनिंग, (8) 1858 ई., (9) कुशासन, (10) फूट डालो और शासन करो।

© JCERT not to be republished

(II) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था ?

(क) दाड़ी रखने की मनाही (ख) छुट्टी नहीं मिलना

(ग) युद्ध वास्ते विदेश जाना (घ) चर्बी वाले कारतूस का इस्तेमाल

(2) विद्रोह कहाँ से आरंभ हुआ ?

(क) दिल्ली (ख) मेरठ (ग) झाँसी (घ) कानपुर

(3) मंगल पाण्डेय ने कहाँ विद्रोह किया था ?

(क) दिल्ली (ख) बैरकपुर (ग) कानपुर (घ) बंगाल

(4) झांसी में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया ?

(क) नाना साहेब (ख) कुँवर सिंह (ग) मंगल पाण्डेय (घ) रानी लक्ष्मीबाई

(5) भारत का प्रथम वायसराय कौन था ?

(क) वेलेस्ली (ख) डलहौजी (ग) हेस्टिंग्स (घ) कैनिंग

(6) भारत में कम्पनी शासन कब समाप्त हुआ ?

(क) 1855 (ख) 1856 (ग) 1857 (घ) 1858

(7) कुँवर सिंह कहाँ के जमींदार थे ?

(क) आरा (ख) जगदीशपुर (ग) दरभंगा (घ) छपरा

(8)झारखण्ड में 1857 ई. की क्रांति किस जगह शुरु हुई ?

(क) रोहिनी (ख) ओरमांझी (ग) पदमा (घ) पलामू

(9)झारखण्ड में विद्रोह की शुरुआत कब हुई ?

(क) 10 मई, 1857 (ख) 12 मई, 1857 (ग) 10 जून, 1857 (घ) 12 जून, 1857

(10) झारखण्ड में 1857 के विद्रोह का प्रेरक कौन था ?

(क) जयमंगल पाण्डेय (ख) अशोक पाण्डेय

(ग) विश्वनाथ शाहदेव (घ) शेख भिखारी

(11) 1857 ई. का विद्रोह असफल रहा। इसके प्रमुख कारण क्या थे ?

(क) भारतीय को लड़ने नहीं आता था। (ख) भारतीय कमजोर थे।

(ग) हाथियारों और गोला बारुद सीमित था। (घ) अंग्रेज सैनिक संख्या में ज्यादा थे।

(12) 1858 ई. में ब्रिटिश संसद में पास हुए कानून के बाद महारानी के घोषणा को भारत का किस जगह पर पढ़कर सुनाया गया ?

(क) कानपुर (ख) लाहौर (ग) इलाहाबाद (घ) दिल्ली

(13) विद्रोह के समय के मुगल शासक का नाम बताएँ।

(क) अकबर (ख) औरंगजेब (ग) बहादुरशाह जफर (घ) रजिया बेगम

(14) सेना का समुद्र पार जाकर भी युद्ध करने की अनिवार्यता वाला नियम कब बना ?

(क) 1855 (ख) 1856 (ग) 1857 (घ) 1858

(15) 1857 ई. में विद्रोहियों ने दिल्ली पर कब्जा कब किया ?

(क) 10 मई 1857 (ख) 11 मई 1857 (ग) 12 जून 1857 (घ) 31 जुलाई 1857

उत्तर—(1) घ, (2) ख, (3) ख, (4) घ), (5) घ, (6) घ, (7) ख, (8) क, (9) ग, (10) घ, (11) ग, (12) ग, (13) ग, (14) ख, (15) ख।

© JCERT not to be republished

लघुउत्तरीय प्रश्न—

(1) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की अंग्रेजों से ऐसी क्या माँग थी जिसे अंग्रेजों ने ठुकरा दिया ?

(2) सिपाहियों को नए कारतूसों पर क्यों ऐतराज था ?

(3) नाना साहेब कौन थे ?

(4) झारखण्ड में 1857 की क्रांति की शुरूआत कब और कैसे शुरू हुई ?

(5) चुटुपालू घाटी में झारखण्ड के किन स्वतंत्रता सेनानियों को फाँसी दी गयी थी।

(6) जमींदारों ने अंग्रेजों सरकार का विरोध क्यों किया ?

(7) विद्रोहियों में किन बातों की कमी थी जिसके कारण वे असफल हुए ?

(8) सामाजिक सुधार 1857 के विद्रोह का कारण कैसे बना ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न—

(1) 1857 के विद्रोह के कारणों पर प्रकाश डालें ?

(2) 1857 विद्रोह के विभिन्न परिणामों पर चर्चा कीजिए ?

(3) बहादुरशाह जफर द्वारा विद्रोहियों को समर्थन देने से जनता और राज-परिवार पर क्या असर पड़ा ?

आइए करके देखें—

(1) भारत के मानचित्र पर तिथि के अनुसार विद्राह के विस्तार को दशाएँ।

(2) कल्पना कीजिए कि पकड़े जाने पर बहादुरशाह जफर के मन में क्या-क्या आए गयें।

© JCERT not to be republished